International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 5 Issue 09, September 2018 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 4.218
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

राष्ट्रीय आय में तृतीयक क्षेत्र का योगदानः सकल घरेलु उत्पाद के सन्दर्भ में

Indresh Kumar[1], Dr. S.K. Bhogal[2]
Department of Economics
[1,2]Shri Venkateshwara University, Gajaraula (Amroha), U.P. India

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध में तृतीयक क्षेत्र का राष्ट्रीय आय में योगदान पर केन्द्रित है। इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय आय की अवधारणा, राष्ट्रीय आय के मापन की विधियां, राष्ट्रीय आय के प्रमुख क्षेत्रों का वर्णन किया गया है। अध्याय के अन्तिम भाग में राष्ट्रीय आय में तृतीयक क्षेत्र विभिन्न उपक्षेत्रों के बढ़ते योगदान को विश्लेषित किया गया है।किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का आकलन करने में राष्ट्रीय आय की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। विभिन्न देशों में राष्ट्रीय आय का भिन्न–2 प्रकार से परिभाषित किया जाता है। ''किसी देश में, एक वित्तीय वर्ष में, उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का मौद्रिक मूल्य का योग उस देश की राष्ट्रीय आय कहलाती है। दूसरे शब्दों में, 'राष्ट्रीय आय एक वित्तीय वर्ष में किसी अर्थव्यवस्था की उत्पादन शक्ति को मापता है।

1. राष्ट्रीय आय की अवधारणाएं

राष्ट्रीय आय को मापने के लिए प्रायः अनेक अवधारणाओं का प्रयोग किया जाता है। यह बहुत कुछ उस उद्देश्य पर निर्भर करता है जिसके लिए राष्ट्रीय आय का प्रयोग किया जाता है। किसी देश में एक वित्तीय वर्ष में देश की भौगोलिक सीमा (डी) के भीतर उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मौद्रिक मूल्य को योग (जी) सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है। भौगोलिक सीमा के भीतर निवास करने वाले विदेशी (एम). देशियों (एक्स) द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मौद्रिक मूल्य शामिल किया जाता है।

किसी देश की अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष के सकल राष्ट्रीय उत्पाद में मूल्य ह्रास को घटाने पर जो शेष बचता है वह शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद कहलाता है।भारत में अभी विश्वसनीय और पर्याप्त आकड़ों को अभाव है, और अनेक विषयों से सम्बन्धित वांछित जानकारी नहीं है। इसलिए राष्ट्रीय आय के विभिन्न पहलूओं से सम्बन्धित पर्याप्त मात्रा में आकड़ें उपलब्ध नहीं होते हैं।

स्वतन्त्रता से पहले राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने के लिए कोई खास प्रयास नहीं किया गया। परन्तु कुछ व्यक्तियों ने सीमित तथ्यों के आधार पर इसकी जानकारी का प्रयास किये है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार ने आर्थिक नियोजन के लिए राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित आकड़ों का महत्व समझते हुए इसका अनुमान लगाने के लिए राष्ट्रीय आय समिति गठित की थी। इस समिति ने 1948–49, 1949–50 तथा 1950–51 की चालू वर्ष की कीमतों आधार पर राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाया गया था। राष्ट्रीय आय समिति द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के द्वारा राष्ट्रीय आय के आकलन का कार्य केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (ब्वे) को सौंप दिया गया है केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन वर्तमान समय में प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकीय जिसे वाइट पेपन भी प्रकाशित करता है। जिसे देश की राष्ट्रीय आय के विभिन्न पहलुओं के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्रस्तुत की जाती है।

राष्ट्रीय आय की गणना राष्ट्रीय आय की गणना निम्नलिखित प्रकार से की जा सकती है.

1. बाजार कीमत।
2. साधन कीमतध फॅक्टर कॉस्ट ।
3. स्थिर मूल्य।
4. वर्तमान मूल्य।

1. बाजार कीमतः– जिस मूल्य पर क्रेता खरीदने को और विक्रेता बेचने को तैयार होता है, वह उस वस्तु की बाजार कीमत होती है।

2 साधन कीमतः– किसी वस्तु के उत्पादन में 5 साधनों– भूमि, श्रम, पूँजी, संगठन और साहस का प्रयोग किया जाता है। उक्त 5 साधनों पर आने वाली कुल लागत के योग को कुल उत्पादित मात्रा से भाग देने पर उस वस्तु की साधन कीमत ज्ञात होती है।

3. स्थिर मूल्यः– आधार वर्ष में वस्तुओं एवं सेवाओं की जो बाजार कीमत होती है उसी पर ही स्थिर मूल्यों पर राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है।

4. वर्तमान मूल्यः– जिस वित्तीय वर्ष में राष्ट्रीय आय की गणना करनी हो उसी वर्ष वस्तुओं एवं सवओं की जो बाजार कीमत होती है उसी मूल्यों पर ही राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है। राष्ट्रीय आय की गणना स्थिर मूल्यों एवं वर्तमान मूल्यों दोनों पर ही ज्ञात किया जाता है। स्थिर मूल्य वर्तमान मूल्य की तुलना में कम होता है। वर्तमान मूल्य अधिक होने का कारण मुद्रास्फीति है। ' राष्ट्रीय आय की गणना की व्यावहारिकताः– राष्ट्रीय आय की गणना की व्यावहारिकता को तालिका से स्पष्ट किया जा सकता हैराष्ट्रीय आय में तृतीयक क्षेत्र का योगदानः सकल घरेलु उत्पाद के सन्दर्भ में

बाजार कीमत	**साधन कीमत**
बाजार कीमत में विभिन्न लागतें हैं, जैसे–अप्रत्यक्ष कर + परिवहन लागत + विज्ञापनलागत + लाभ जुडा होता है।	साधान कीमत में वस्तु के उत्पादन के साधन में आने वाली कुल लागत का योग मात्र होता है।
बाजार कीमत साधान कीमत से बड़ा होता है।	साधन कीमत बाजार कीमत से छोटा होता है
बाजार कीमत में उपभोक्ता वस्तु की कीमत में तोल–मोल कर सकता है।	साधन कीमत में मोल–तोल करना संभव नहीं है।
प्रायः अलग अलग जगह पर वस्तु की बाजार कीमत भिन्न–भिन्न होती है।	साधन कीमत लगभग हर स्थान पर समान होती है।
बाजर कीमत में करना कठिन है।	साधन कीमत मे करना आसान है।

उपरोक्त मूल्यांकन से स्पष्ट है कि व्यवहारिक है। परन्तु वर्तमान में राष्ट्रीय आय की है। उपरोक्त धारणाओं के आधार पर सकता हैः

सूत्रः–

- **Naitonal Income = GDPMC –Indiect Tax –Depreciation**
- **National Income = NNPMC –Depreciation + Subsidy**
- **National Income = GNPMC –Indirect Tax- Deprciation + Subsidy**

2.राष्ट्रीय आय को मापने की विधियां

राष्ट्रीय आय को तीन प्रमुख विधियों से मापा जा सकता है जो निम्नवत् है.

1. उत्पाद गणना विधि :

राष्ट्रीय आय मापने की उत्पाद विधि को मूल्य विधि या औद्योगिक विधि या शुद्ध उत्पाद विधि कहा जाता है। एक देश के घरेलू सीमा के अन्दर की गई मूल्य वृद्धि के कुल जोड़ को ही घरेलू उत्पाद आय कहते है। इस पद्धति के अन्तर्गत देश में एक वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं का शुद्ध मूल्य ज्ञात किया जाता है तथा इसके योग को अन्तिम उपज योग कहा जाता है यह वास्तव में सकल घरेलू उत्पाद को दर्शाता है।

राष्ट्रीय आय की गणना के लिए सकल घरेलू उत्पाद के मूल्य में विदेशों में अर्जित शुद्ध आय को जोड़ा जाता है तथा मूल्य हास को घटाया जाता है। कृषि. वानिकी. मत्स्य पालन. विनिर्माण खनन एवं उत्खनन।

2. आय गणना विधि :

इस विधि के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय की गणना के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत् व्यवसायिक उपक्रमों की शुद्ध आय का योग प्राप्त किया जाता है। इस विधि के अन्तर्गत निम्न समीकरण उपयोग में लाया जा सकता है।

राष्ट्रीय आय= कुल लगाऩकुल मजदूरी कुल ब्याज़कुल लाभ

बिजली, गैस एवं जल आपूर्ति . व्यापार, होटल, यातायात एवंसंचार . वित्त, बीमा, रीयल स्टेट एवं व्यापार सेवाएं . सामुदायिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत सेवाएं।

3. उपभोग बचत विधि :

इस विधि को आय विन्यास विधि या उपभोग एवं निवेश व्यय विधि भो कहा जाता है। व्यय विधि वह विधि है जिसका प्रयोग करके हम बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद की गणना देश की घरेलू सीमा में एक लेखा वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं पर किये गये कुल व्यय द्वारा ज्ञात किया जाता है।

इस विधि में कुल आय या तो उपभोग पर व्यय की जाती है अथवा बचत पर। इस विधि से आय की गणना करने के लिए उपभोक्ता की आय तथा उनकी बचत से सम्बंधित आकडों का उपलब्ध होना आवश्यक होता है। भारत में राष्ट्रीय आय की गणना के लिए उत्पादन प्रणाली तथा आय प्रणाली का सम्मिश्रण प्रयोग किया जाता है।

3. भारत के सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान

प्रस्तुत खण्ड में देश के कुल सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान उत्पादन लागत के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। उत्पादन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों के योगदान तालिका संख्या–2.1 में प्रदर्शित किया गया है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन अवधि के दौरान प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्र के सकल घरेलू उत्पाद में लगातार वृद्धि हुई है। अध्ययन अवधि में प्राथमिक क्षेत्र में 650454 से 2129000 करोड़ रूपये, द्वितीयक क्षेत्र में 744755 से 2371520 करोड़ रूपये तथा तृतीयक क्षेत्र में 1576255 से 5972287 करोड़ रूपये के बीच है, अध्ययन अवधि में उद्योगों के मूल के अनुसार उत्पादन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों की योगदान क्रमशः औसतन 1274235, 1517473 तथा 3389495 करोड़ रूपये है।

उत्पादन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों में प्राथमिक क्षेत्र की 19.89 से 21.89 प्रतिशत, द्वितीयक क्षेत्र की 22.64 से 26.31 प्रतिशत तथा तृतीयक क्षेत्र की 52.71 से 57. 03 प्रतिशत की हिस्सेदारी रही हैं।अध्ययन अवधि के 10 वर्षों (2004–05 से 2013–14) के दौरान यह भी कहा जा सकता है कि सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों का कुल योगदान वर्ष 2004–05 में 2971464 से बढ़कर वर्ष 2013–14 में 10472807 करोड़ रूपये हो गया है इसका संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर 15.02 प्रतिशत है।अतः तालिका के स्पष्ट है कि भारत के राष्ट्रोय आय में सकल घरेलू उत्पाद का योगदान प्राथमिक तथा द्वितीयक क्षेत्र के अपेक्षाकृत तृतीयक क्षेत्र का योगदान अधिक रहा है। जो निरन्तर बढ़ रहा है।

तालिका संख्या 1 सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान (वर्तमान मूल्यों पर) (करोड़ रूपये में)

वर्श	व्यापार, होटल, परिवहन और संचार	वित्त पोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा और कारोबारी सेवाएं	लोक प्रशासन तथा रक्षाएवम् अन्य सेवाएं	कुल योग
2007-08	961330 (20.98) [148]	1205458 (26.31) [162]	2415298 (52.71) [153]	4582086

2008-09	1083032 (20.42) [167]	1360426 (25.65) [183]	2860109 (53.93) [181]	5303567
2009-10	1242818 (20.34) [191]	1536492 (25.15) [206]	3329593 (54.50) [211]	6108903
2010-11	1524552 (21.03) [234]	1763584 (24.33) [237]	3960723 (54.64) [251]	7248859
2011-12	1721814 (20.52) [265]	2061650 (24.57) [277]	4608227 (54.91) [292]	8391691
2012-13	1867342 (19.89) [287]	2238029 (23.84) [301]	5283505 (56.27) [335]	9388876
2013-14	2129000 (20.33) [327]	2371520 (22.64) [318]	5972287 (57.03) [379]	10472807
औसत	1274235	1517473	3389495	6181203
संयुक्त वार्शिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)	14.08	13.73	15.95	15.02

4. सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्र के विभिन्न उप–क्षेत्रों का योगदान

प्रस्तुत खण्ड में देश के कुल सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्र के विभिन्न उप क्षेत्रों का योगदान उत्पादन लागत के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। तृतीयक क्षेत्र के रूप में व्यापार, होटल, परिवहन, संचार वित्त पोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा और कारोबारी सेवाएं तथा लोक प्रशासन, रक्षा एवम् अन्य सेवाएं के क्षेत्रों का सकल घरेलू उत्पाद में बड़ा योगदान है।

उत्पादन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्र के विभिन्न उपदृक्षेत्रों का योगदान तालिका संख्या–2.2 में प्रदर्शित है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन अवधि के दौरान व्यापार, होटल, परिवहन और संचार, वित्त पोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा और कारोबारी सेवाएं तथा लोक प्रशासन, रक्षा एवम् अन्य सेवाएं के क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद में लगातार वृद्धि हुई है। यह अध्ययन अवधि में व्यापार, होटल, परिवहन और संचार क्षेत्र में 727720 से 2509907 करोड़ रूपये, वित्त पोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा और कारोबारी सेवाएं क्षेत्र में 437174 से 1939480 करोड़ रूपये तथा लोक प्रशासन, रक्षा एवम् अन्य सेवाएं क्षेत्र में 411361 से 1522898 करोड़ रूपये के बीच है, अध्ययन अवधि में उद्योगों के मूल के अनुसार उत्पादन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्र के विभिन्न उपदृक्षेत्रों की योगदान क्रमश औसतन 1520172,1012197 तथा 857126 करोड़ रूपये है।उद्योगों के मूल के अनुसार उत्पादन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्र के विभिन्न उपदृक्षेत्रों में व्यापार, होटल, परिवहन और संचार क्षेत्र की 44.00 से 47.77 प्रतिशत, वित्त पोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा और कारोबारी सेवाएं क्षेत्र की 27.41 से 32.47 प्रतिशत तथा लोक प्रशासन, रक्षा एवम् अन्य सेवाएं क्षेत्र की 23.76 से 26.10 प्रतिशत की हिस्सेदारी रही हैं।

अध्ययन अवधि के 10 वर्षों (2004–05 से 2013–14) के दौरान यह भी कहा जा सकता है कि सकल घरेलू उत्पाद में त्तीयक क्षेत्र के विभिन्न उपदृक्षेत्रों का कुल योगदान वर्ष 2004–05 में 1576255 से बढ़कर वर्ष 2013–14 में 5972287 करोड़ रूपये हो गया है अत. इसका संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर 15.95 प्रतिशत है।तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सेवा वर्गों के विभिन्न क्षेत्रों यथा, व्यापार, होटल, परिवहन, संचार स्थावर सम्पदा, वित्त पोषण, बीमा तथा कारोबारी सेवाओं का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान बढ़ता हुआ पाया गया है जबकि लोक प्रशासन, रक्षा एवम् अन्य सेवाओं में कमी पायी गयी है।

तालिका संख्या 2 सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्र के विभिन्न उप–क्षेत्रों का योगदान (वर्तमान मूल्यों पर) (करोड़ रूपये में)

वर्श	व्यापार, होटल, परिवहन और संचार	वित्त पोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा और कारोबारी सेवाएं	लोक प्रशासन तथा रक्षा एवम् अन्य सेवाएं	कुल योग
2004-05	727720 (46.17) [100]	437174 (27.73) [100]	411361 (26.10) [100]	1576255
2005-06	846606 (47.06) [116]	493102 (27.41) [113]	459151 (25.52) [112]	1798859
2006-07	998379 (47.77) [137]	586595 (28.07) [134]	505121 (24.17) [123]	2090095
2007-08	1150044 (47.61) [158]	691464 (28.63) [158]	573790 (23.76) [139]	2415298
2008-09	1310845 (45.83) [180]	845369 (29.56) [193]	703895 (24.61) [171]	2860109
2009-10	1481623 (44.50) [204]	964937 (28.98) [221]	883033 (26.52) [215]	3329593
2010-11	1779630 (44.93) [245]	1165243 (29.42) [267]	1015850 (25.65) [247]	3960723
2011-12	2072272 (44.97) [285]	1381524 (29.98) [316]	1154431 (25.05) [281]	4608227
2012-13	2324695 (44.00) [319]	1617076 (30.61) [370]	1341734 (25.39) [326]	5283505
2013-14	2509907 (42.03) [345]	1939482 (32.47) [444]	1522898 (25.50) [370]	5972287
औसत	1520172	1012197	857126	3389495
संयुक्त वार्शिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)	14.75	18.00	15.65	15.95

5. विभिन्न क्षेत्रों का वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)

सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों की वार्षिक वृद्धि दर तालिका संख्या–2.3 में प्रदर्शित है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के दौरान उत्पादन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों यथा– प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्र की वार्षिक वृद्धि दर में उच्चावचन की प्रवृत्ति रही हैं। यह अध्ययन अवधि में प्राथमिक क्षेत्र में 8.45 से 22 67 प्रतिशत, द्वितीयक क्षेत्र में 5.96 से 20.25 प्रतिशत तथा तृतीयक क्षेत्र में 13.04 से 18.96 प्रतिशत के बीच है, अध्ययन अवधि में सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों की वार्षिक वृद्धि दर क्रमशः औसतन 14.14, 13.81 तथा 15.97 प्रतिशत है।इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राथमिक, द्वितीयक क्षेत्र का वार्षिक वृद्धि दर तृतीयक क्षेत्र से अपेक्षाकृत कम रहा है।

ग्राफ संख्या 1 विभिन्न क्षेत्रों का वार्शिक वृद्धि दर (वर्तमान कीमतों पर)

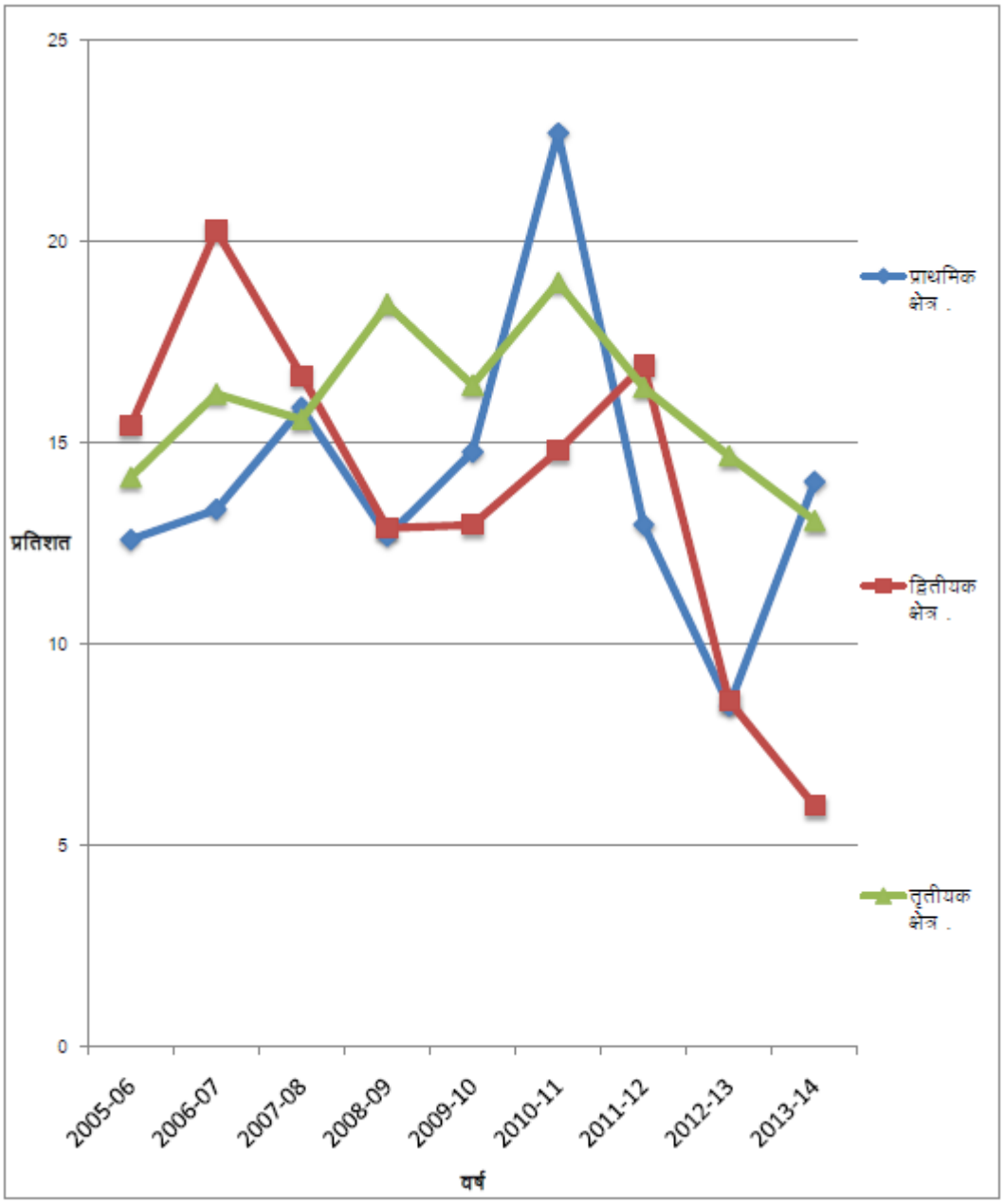

6. भारत के सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान

(स्थिर मूल्यों पर) प्रस्तुत खण्ड में देश के सकल घरेलू उत्पाद (स्थिर मूल्यों पर) में विभिन्न क्षेत्रों के योगदान को उत्पादन लागत के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। सकल घरेलू उत्पाद का सृजन मुख्यतः तीन क्षेत्रद्द प्राथमिक, द्वितीयक (विनिर्माण, निर्माण, बिजली, गैस तथा जलापूर्ति), तृतीयक क्षेत्र (व्यापार, होटल, परिवहन, संचार, वित्त पोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा, सामूहिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत सेवाएं) के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

उत्पादन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों के योगदान (स्थिर कीमतों पर) तालिका संख्या–24 में प्रदर्शित है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन अवधि के दौरान प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्र के सकल

घरेलू उत्पाद में लगातार वृद्धि हुई है। यह अध्ययन अवधि में प्राथमिक क्षेत्र में 650454 से 903768 करोड़ रूपये, द्वितीयक क्षेत्र में 744755 से 1393387 करोड़ रूपये तथा तृतीयक क्षेत्र में 1576255 से 3441017 करोड़ रूपये के बीच है, अध्ययन अवधि में उद्योगों के मूल के अनुसार उत्पादन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों की योगदान क्रमशः औसतन 778210, 1117906 तथा 2478549 करोड़ रुपये

उत्पादन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों में प्राथमिक क्षेत्र की 15.75 से 21.89 प्रतिशत, द्वितीयक क्षेत्र की 24.28 से 26.28 प्रतिशत तथा तृतीयक क्षेत्र की 53.05 से 59. 97 प्रतिशत की हिस्सेदारी रही हैं।

अध्ययन अवधि के 10 वर्षों (2004–05 से 2013–14) के दौरान यह भी कहा जा सकता है कि सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों का कुल योगदान वर्ष 2004–05 में 2971464 से बढ़कर वर्ष 2013–14 में 5738190 करोड़ रूपये हो गया है अतः इसका संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर 7.59 प्रतिशत है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि विभिन्न क्षेत्रों की योगदान की अपेक्षा तृतीयक क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान अधिक है। जिसमें प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्र में उच्चावचन की स्थिति रही है।

ग्राफ–2.4 सकल घरेलू उत्पाद (स्थिर कीमतो) में विभिन्न क्षेत्रों के योगदान को ग्राफ द्वारा प्रस्तुत करते हुए तृतीयक क्षेत्र के वृद्धि दर को जानने का प्रयास किया गया हैं। विभिन्न क्षेत्रों के योगदान के ग्राफ से स्पष्ट ळे कि प्राथमिक क्षेत्र एवं द्वितीयक क्षेत्र की तुलना में तृतीयक क्षेत्र का योगदान अधिक रहा हैं जो विभिन्न वर्षा में वृद्धि करते हुए पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि सकल घरेलू उत्पाद में अन्य दो क्षेत्रों की अपेक्षा तृतीयक क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक रहा हैं।

ग्राफ संख्या 2 सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान

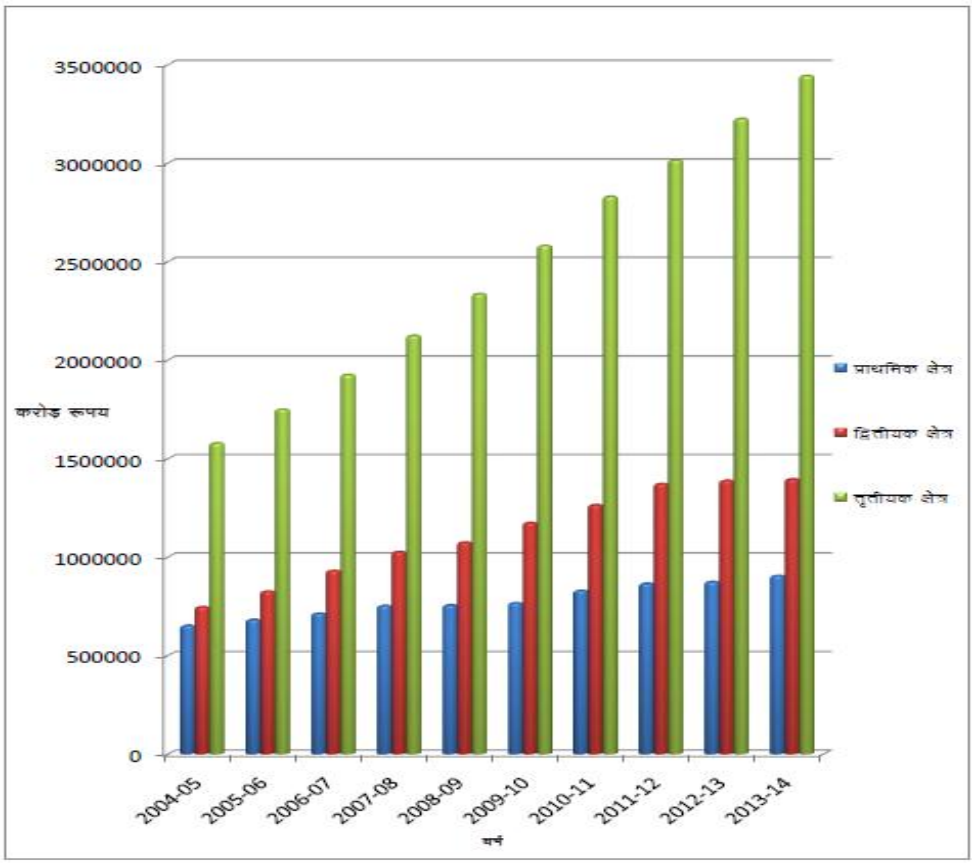

7. निश्कर्श

अध्ययन अवधि के दौरान सकल घरेलू उत्पाद में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान वर्ष 2004–05 में 21.89 प्रतिशत है, जो निरन्तर घटकर वर्ष 2013–14 में 20.33 प्रतिशत हो गया है। द्वितीयक क्षेत्र का योगदान वर्ष 2004–05 में 25.06 प्रतिशत है जो वर्ष 2007–08 में बढ़कर 26.31 प्रतिशत हो गया और वर्ष 2013–14 में यह घटकर 22.64 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के वर्षों में उच्चावचन के साथ बढ़ोत्तरी तथा घटोत्तरी हुई है। तृतीयक क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान निरन्तर बढ़ रहा है। जो वर्ष 2004–05 में 53.04 प्रतिशत था जो वर्ष 2013–14 में

निरन्तर बढ़कर 57.03 प्रतिशत हो गया है। इससे स्पष्ट है कि राष्ट्रीय आय में अन्य क्षेत्रों के अपेक्षा तृतीयकक्षेत्र का योगदान सर्वाधिक रहा है। जो विभिन्न वर्षों में बढ़ता ही रहा है।

8. संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अब्दुल समद (2005), राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठन का शिक्षकों की कार्यकुशलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन : अन्वेषिका इण्डियन जनरल ऑफ टीचर एजुकेशन वाल्यूम 3 न. 2 जून एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली।
- आनन्द सरोज, दरबारी कविता (2011), शिक्षक शिक्षा में मूल्यांकन सुधारात्मक शिक्षण के परिप्रेक्ष्य में शोध अध्ययन अन्वेषिक इण्डियन जनरल ऑफ टीचर एजुकेशन बाल्यूम 3 नं. 2 जून एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली।
- अग्रवाल जे. सी. (2005), शैक्षिक तकनीकी तथा प्रबंध के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- ओबराय एस. सी. (2005), शैक्षिक तकनीकी आर. ए. बुक डिपों, नई दिल्ली।
- कृपलानी मधु (2013), शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम का आदर्श प्रश्न पत्र निर्माण मानक प्रारूप के संदर्भ में अध्ययन : इवेल्यूशन इन एलीमेन्ट्री टीचर एजुकेशन 2013 एनसी. ई. आर. टी. नई दिल्ली।
- करेवा पवन (1992), ए स्टडी ऑफ एन एटीट्यूट टूवर्ड माइका टीचिंग : इन फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (1988–92) वाल्यूम 2, एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली।
- शर्मा, आर. ए. (2011), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपों, मेरठ।